International Journal of Sanskrit Research 2016; 2(1): 79-82

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2016; 2(1): 79-82
© 2016 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 22-11-2015
Accepted: 26-12-2015

डॉ. आराधना सारवान
व्याख्याता (हिन्दी), राजकीय शास्त्री संस्कृत महाविद्यालय, अलवर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. आराधना सारवान
व्याख्याता (हिन्दी), राजकीय शास्त्री संस्कृत महाविद्यालय, अलवर, राजस्थान, भारत

प्रेमचन्द के उपन्यासों में ग्रामीण नारियों का संघर्ष

डॉ. आराधना सारवान

प्रस्तावना

मुंशी प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में नारी संघर्ष को ग्रामीण एवं शहरी नारी के माध्यम से व्यक्त किया है । भारत के साथ गांव का सम्बन्ध विशेष रुप से जुड़ा हुआ है । भारत जैसा कृषि प्रधान देश सदैव भूमि पर ही आश्रित रहा है । यहां की सभ्यता और संस्कृति के केन्द्र बिन्दु गांव ही थे । भारत की किसी भी परिस्थिति का अध्ययन करने के लिए सम्भवतः गांवों का अध्ययन अपेक्षित होगा । एक समय था जब नगरों का नाम ही था । भारत का वह प्राचीन रूप ही उसके गौरव और महिमा का इतिहास है, सभ्यता और संस्कृति का प्रकाश है । भारत का वह काल स्वर्णयुग था । आज भी भारत विषयक अध्ययन वैदिक युगीन भारत के अध्ययन के बिना अधूरा ही रहेगा, क्योंकि हमारे देश की सभ्यता व संस्कृति का विकास ग्रामों से ही हुआ है ।

भारत में वातावरण और परिस्थिति परिवर्तन के साथ-साथ जंगल ही पशुओं के चरागाह, कुटिर, अरण्यखण्ड, आश्रम, जनपद और नगर के रूप में परिवर्तन हुए हैं । आज के वैज्ञानिक और विकासशील युग में जिस प्रकार ग्रामों की उन्नति की विभिन्न योजनाएं बन रही हैं ।

उनके विकास के लिए आर्थिक राजनीतिक और सामाजिक रूप से जो सामूहिक प्रयत्न किए जा रहे हैं । वे इस बात के जीवित प्रमाण हैं कि भारतीय जीवन का आधार एक मात्र ग्राम ही है । गांव के इस महत्व को विदेशी शासकों ने भी अच्छी तरह से समझा था । इसी कारण देश की अवनति और विपन्नता के लिए उन्होंने ग्राम संगठनों पर कुठाराघात किया । ग्राम्य जीवन के बिखराव से ही देश की समृद्धि समाप्त हुई और जीवन का सन्तुलन समाप्त हुआ और देश की एकता और स्वतन्त्रता क्षीण हो गई एक प्रकार से ग्राम्य ही देश की शक्ति और संगठन के आधार थे । अंग्रेजी में गांव के लिए 'विलेज अथवा विला' शब्द का प्रयोग होता है । "विला मूलतः फ्रेंच शब्द है जिसका अर्थ होता है, ग्रामीण निवास स्थान[1]" । विलेज का अर्थ है घरों का समूह । यह वह स्थान होता है जो नगर से छोटा और हैमलेट से बड़ा हो । इंग्लैण्ड में आदिकाल समय में भूमि के वे टूकडे व घरों के समूह जो छोटे-छोटे हैमलेट से बिखरे रहते थे 'विलेज' कहलाते थे ।

हमारे देश, हमारी सभ्यता तथा संस्कृति की सही पहचान तो हमारे गांव ही है । जब हमारे गांव की ही धरा हिलने लगी हो तो सभ्यता को आधार कहाँ ? देश की दुर्व्यवस्था अकारण नहीं थी बल्कि इसे दयनीय दशा तक पहुंचानें के लिए अंग्रेजी सरकार ने अनेक कानून बनाये थें ।

ग्राम जीवन की इस दीन-हीन अवस्था को पूंजीपति वर्ग बढ़ावा देता रहा, मध्यम वर्ग विवश घुटता रहा तथा निम्न वर्ग तो बेमौत मरता रहा, परन्तु मानवतावादी लेखक यह सब देखकर भला कैसे मौन रहता ? गांवों का पतन सम्पूर्ण भारत का पतन है । प्रेमचन्द की आत्मा यह पतन और अंग्रेजों की दमन नीति को देख कर तड़फ उठी और इसी तड़फन ने उसे उपन्यास लिखने की प्रेरणा दी, जो कि उनके उपन्यासों में अभिव्यक्त हुई ।

प्रेमचन्द वस्तुतः ग्राम्य लेखक हैं । उनका सम्पूर्ण जीवन गांवों में ही बीता । इसीलिए गांव उनकी दृष्टि से अछूते नहीं रह सके । प्रेमचन्द की चेतना इतनी विकसित थी कि आज के बदलते मूल्यों के युग में भी उसका वही तेवर दिखाई पड़ता है, जो तत्कालिन युग में था । "प्रेमचन्द के चरित्र ग्रामीण वातावरण की उपज है, उनमें अदम्य इच्छायें हैं तथा साथ ही जीवन जीने की लालसा भी । संकटों में फंसे हुए एवं समस्याओं से जुझते रहने पर भी प्रेमचन्द के पात्र कभी घबराते नहीं, वे परेशान तो होते हैं, किन्तु उस परेशानी से मुक्त होने के लिए प्रयत्नशील भी हैं[2]" । गांव का किसान प्रेमचन्द साहित्य के केन्द्र में ही है । "ग्राम्य जीवन को प्रेमचन्द ने सरलता, स्पष्टता, अभावग्रस्तता, धर्मभीरुता के बीच परखने का जो प्रयास किया उसमें किसान का चरित्र अत्यन्त साफ सुथरा उभरा हुआ है । किसान की प्रकृति का प्रेमचन्द से बडा सम्पूर्ण साहित्य मे कोई पारखी नहीं है[3]" ।

प्रेमचन्द का जन्म गांव में ही हुआ था यही कारण है कि गांव से उसका धनिष्ठ सम्बन्ध रहा । उन्होंने अपने उपन्यासों में ग्रामीण जीवन की समस्याओं को अभिव्यक्ति दी है । 'प्रेमाश्रम, गोदान, उपन्यास तो सम्पूर्ण रुप से ग्राम्य जीवन का प्रतिनिधित्व करते हैं । कर्मभूमि, वरदान एवं कायाकल्प में भी आंशिक रूप से ग्रामीण समस्याओं पर विचार किया गया है । धनिया प्रेमचन्द साहित्य की अन्यतम उपलब्धि है । केवल धनिया ही नहीं बल्कि उनका 'गोदान' उपन्यास ही एक महान उपलब्धि है । धनिया इसी उपन्यास की नायिका है जो नायक होरी की पत्नी है । उसकी उम्र छतीस वर्ष थी किन्तु "सारे बाल पक गये थे, चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ थी, सारी देह ढल गई थी, वह सुन्दर गेहुँआ रंग सॉवला हो गया था, आंखों से भी कम दिखने लगा था[4]" ।

प्रेमचन्द की नारी 'गोदान' उपन्यास तक पहुँचते-पहुँचते अपने चरित्र का पूर्ण रूप से विकास कर चुकी थी । धनिया एक व्यवहार कुशल स्त्री नहीं थी । उसकी उस व्यवहार शून्यता और स्पष्टवादिता ने ही उसको अनेक बार पुलिस के पिशाचों एवं बिरादरी के भूतों से बचाया था । अपने बीस वर्षो के अभाव ग्रस्त वैवाहिक जीवन में उसे भली-भांति अनुभव हो गया था कि यदि वह हार मानकर बैठ गई तो जीवन की गाड़ी रूक जायेगी । वह विपत्तियों के आगे झुकने वाली नारी नहीं है । जीवन के यथार्थताओं से टकराते-टकराते धनिया दुःखी उठती है इस प्रकार उसका सम्पूर्ण जीवन ही अभावग्रस्त रहता है ।

प्रेमचन्द की यह नारी उग्रता से परिपूर्ण है, उग्रता उसके स्वभाव में ही है । वह दबना, झुकना नहीं जानती, टूटे भले ही, किन्तु अन्याय के प्रति विद्रोह का स्वर उसके चरित्र की महत्वपूर्ण विशेषता है । जब घर में गाय आती है तो उसका देवर आक्षेप लगाता है कि सांझे का माल दबा गए । यह स्वर सुनकर वह तिलमिला उठती है और जवाब देती है "डाढ़ी हजारों के पीछे हम बर्बाद हो गये, सारी जिन्दगी मिट्टी में मिला दी, पालपोस कर सांड किया और अब वह बेईमान है --- मैने हंडे भर अशर्फिया छिपा ली[5]" । धनिया का यह कोप उसके शोषित स्वाभिमान की फुंकार है ।

धनिया का चरित्र एक सशक्त अपराजिता स्त्री का चरित्र है । समाज, जाति, धर्म, आदि आडम्बरों को खड़ा करके उसे कभी पराजित नहीं किया जा सकता, लेकिन एक भारतीय रुढिवादी कृषक की पत्नी होने के कारण उसे हर बार पराजय का मुंह देखना पड़ता है । धनिया ग्रामीण भारतीय नारी के एक बहुत बड़े हिस्से की प्रतिनिधि है ।

मुन्नी 'कर्मभूमि' उपन्यास की मुख्य पात्र तो नहीं, लेकिन उसके चरित्र में मुंशी प्रेमचन्द ने जिन विशेषताओं का वर्णन किया है, उन्हीं के कारण वह विशिष्ट पात्रों की श्रेणी में आती है । इस ग्रामीण नारी में प्रारम्भ से ही आत्म सम्मान, नैतिक साहस वह आत्माभिव्यक्ति की भावना थी । वह अत्याचार सहन नहीं कर सकती थी । इन्हीं गुणों के कारण वह दो अत्याचारी अग्रेंजों की हत्या कर डालती है । यह नारी पूर्णरूप से 'सत्याग्रह' से प्रभावित थी । इसीलिए वह मृत गाय के शरीर के पास बैठकर जो सत्याग्रह करती है, उस पर महात्मा गांधीजी के सत्याग्रह का पूरा प्रभाव लक्षित होता है । वह ललकारती हुई कहती है – "अब जिसे गंडासा चलाना हो चलाए बैठी हूँ । यहीं नहीं वह अत्याचार के सामने झुकना नहीं जानती[6]" । अमरकान्त की गिरफ्तारी के अवसर पर संघर्ष की कान्तिकारी भावना से भर कर वह सहसा उत्तेजित होकर कहती है – "इतने जने खड़े ताकते क्या हो, उतार लो मोटर से[7]" । अपना सर्वस्व लुटाने पर भी मुन्नी पूरे साहस के साथ जीवन जीती हैं। उसके जीवन में नया मोड़ जब आता हैं जब वह शहर में जाकर दंगो में सक्रिय भाग लेती है ।

मुन्नी एक साहसी व संयमी राजपूतानी है । सम्राट प्रेमचन्द के इसी उपन्यास की एक अन्य पात्र सलोनी के चरित्र को ग्रामीण जनता की विद्रोही भावना को बड़े सफल रूप में व्यक्त किया है । नौकरशाही के प्रति सलोनी के मन में इतना आक्रोश भरा हुआ था कि उसके अत्याचारों से पीड़ित होकर प्रतिशोध की भावना से वह हाकिम के मुँह पर थूक देती है, और गोलियों के सामने

सीना तानकर खड़ी हो जाती है । हन्टर की हर चोट उसकी प्रतिशोध और ग्लानि की भावना को और अधिक हवा देती है "हर एक हन्टर पर गाली देती थी । जब बेदम होकर गिर पड़ी, तब जाकर उसका मुंह बन्द हुआ[8]"। अर्थाभाव व अत्याचार से उसकी कमर अवश्य झुक गई है, किन्तु उसका कभी सिर नहीं झुका । सलोनी पग-पग पर कुछ न कुछ सीखती ही गई । यही कारण हैं कि सलोनी का जीवन इस बुढ़ापे में सरस हो उठा । व्यक्तिगत सुख-दुःख समाज का सुख-दुःख हो गया है । वह इस फटेहाल में भी हन्टर की मार से सूनी हुई देह को लेकर भी अमरकान्त के पिता समरकान्त से हंसी करती है – "कहां हो देवर जी, सावन में आते तो तुम्हारे साथ झूला झूलती चले हो कार्तिक में[9]"।

प्रेमचन्द के उपन्यास प्रेमाश्रम की नारी विलासी में वर्ग संघर्ष की भावना तीव्र रूप से बलवती होती है । प्रारम्भ में शोषक वर्ग के अत्याचारों से परिचित होने पर भी उन्हें प्रसन्न रखने की चेष्टा करके भी अपने धैर्य और विवेक का परिचय देती है । "जब अत्यचारों की अति हो जाती है और नारी पर भी हाथ उठाये जाते हैं तो उसकी सहनशील शक्ति समाप्त हो जाती है । उसके हृदय में स्थानीय तानाशही के विरुद्ध विद्रोह की चिंगारी फट जाती है । स्त्री के ऊपर हाथ चलाने की बात से ही उसके रोम-रोम से अग्नि की ज्वाला निकलने लगती है[10]"।

'गोदान' उपन्यास की चुहियाँ और झुनियाँ ग्रामीण नारी का एक और उत्कृष्ट उदाहरण हैं । पति-पत्नी में जब मतभेद एवं मनोमालिन्य हो जाये तो दोनो को प्रयत्न करके उसे भुलाना चाहिए ताकि बिना किसी मानसिक तनाव के सहज भाव से जीवन की गाड़ी चलती रहें । इसी आशय को और अधिक स्पष्ट करते हुए चुहियाँ झुनियां से कहती है "मगर हॉ इतना है कि आपस में लडाई हो तो मुंह से चाहे जो बक ले, मन मे कीना न पाले, बीज अन्दर पड़ा हो अखुआ निकले बिना नहीं रहता[11]" । ठेठ ग्रामीण पृष्ठभूमि होते हुए भी दोनों सम्यक् सामाजिक पारिवारिक एवं व्यावहारिक सोच रखती है । यही प्रेमचन्द के पात्रों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता रही है ।

ग्रामीण नारी की ईमानदारी, नैतिकता, एकनिष्ठा, विवेकपूर्ण प्रतिभा ये सब गुण विशेष हैं । गोदान की सिलिया भी इन्हीं गुणों से परिपूर्ण है । वह मातादीन के प्रति अनुरक्त होकर इसके घर में रहते हुए तीन आदमियों के समान परिश्रम करने के पश्चात भी केवल दो रोटियाँ ही प्राप्त करती है । इसके अतिरिक्त मातादीन उसे किसी प्रकार की स्वतन्त्रता नहीं देता । खेतों में उससे काम करवाता और उसे नौकरानी से अधिक नहीं समझता । इतना अपमान सहने पर भी वह भी वह मातादीन को छोड़ने की कल्पना नहीं कर सकती । मां बाप जब सिलिया के अपमान को देखते हैं तो उसे मातादीन के प्रति विद्रोह करने के लिए कहते हैं तो वह मातादीन के प्रति दृढ होकर कहती है – "जिसको एक बार मन से वर लिया, उससे विमुख नहीं हो सकती - - - वह मुझे चाहे भूखी रखें, चाहे मार डाले, पर उसका हाथ ना छोडूंगी[12]" । इतना ही नहीं मातादीन से साहसपूर्वक कहती है "जो रस्सी तुम्हारे गले पड है, उसे लाख चाहों नहीं छोड़ सकते और न ही मैं तुझे छोड़कर जाउंगी, मंजूरी करूंगी, भीख मांगूगी लेकिन तुझे ना छोडूंगी[13]" । इस प्रकार सिलिया अपने प्रेमी पर पूरी तरह आसक्त होकर उसकी सेवा में कोई कमी नहीं छोड़ना चाहती ।

इसी उपन्यास में सोना जो कि सिलिया की हम उम्र पात्र है । दोनों एक ही गांव की हैं । दोनों एक ही सामाजिक व्यवस्था में पली हैं । सोना किसान बालिका हैं । दोनों ही सांवली, सुडौल, प्रसन्न व चंचल प्रवृति की हैं । वह अत्यन्त मेहनती युवती है । जवान होने पर वह भी उसकी भावुकता ने विचारशीलता का स्थान ले लिया । कारण यह था कि अपने माता-पिता धनिया और होरी के दयनीय जीवन की आपद-विपदाओं को वह खुली आंखों से देखती है और भली भांति समझती "वह अपने माता-पिता की अतिशय मानवता, सरलता तथा उनके पैतृक व्यवहार की सहृदयता को पलभर के लिए भी अपनी आंखें से परे नहीं कर सकती । वह कभी अनजाने में भी यह नहीं भूल पाती कि वह किस की बेटी है । उसके स्वभाव मे सन्तुलन है[14]"।

सोना विवाह से पहले प्यार को अवैध समझती है । शादी से पूर्व प्यार को अनुचित मानती है । उसका भाग्य है कि अपने विचारों के अनूकूल उसका विवाह हुआ । प्रतिकूल स्थितियों का सोना को कभी सामना ही नहीं करना पड़ा । सोना को समझदार, ईमानदार, जवान, मेहनती, खूबसूरत इच्छित पति मिला । सोना प्यार के मामलों में एकदम तानाशाह है । गलती होने पर रियायत करना जानती ही नहीं । उसकी दृष्टि में सबसे बड़ा पाप किसी पुरूष का पर-स्त्री का और स्त्री का पर-पुरुष की ओर ताकना था । इस अपराध के लिए उसके यहां कोई क्षमा न थी । हंसी दिल्लगी को वह बुरा समझती थी । एक बार सोना का पति सिलिया से छेड़छाड़ कर बैठता है । सोना उस खुले रूप को देख लेती है, फिर क्या कहना? वह गंडासे से अपना सिर काटने को तैयार हो गई । सिलिया को कहा - तुमने उस पापी - को लात क्यो नहीं मारी ? उसे दांत से काट क्यों नहीं लिया ? उसका खून क्यो नहीं पी लियां ? यह है सोना का प्यार और यही है उसका क्रोध ।

'सेवासदन' उपन्यास में भामा मदन सिहं की मां है । मदन सिंह उसकी एक मात्र सन्तान है इसी कारण वह उसे अगाध प्रेम करती है । "वह पढ़कर लिखकर विद्वान बने, इसकी भामा को चिन्ता नहीं है, अपितु इस बात की चिन्ता है कि वह उसकी आंखो के सामने से न टले[15]" । ग्रामीण नारी की सामन्य विशेषताएं होने पर भी उसे सदैव लोकोपवाद का भय बना रहता है । लोकलाज के

कारण पुत्र के प्रति वात्सल्य भाव रखते हुए भी वह उसे अपने पास नहीं रख सकती थी । उसके हृदय में पुत्र प्रेम इतना गहरा है कि "संसार की लाज से चाहे उसे दूर कर दे, लेकिन वह उसे मन से थोड़े ही दूर कर सकती है[16]" । उसमें धार्मिक अन्धविश्वास भी पूर्णतः भरा हुआ है ।

'रंगभूमि' उपन्यास की सुभागी प्रांसगिक कथा की पात्रा है । वह उपन्यास में ग्रामीण क्षेत्र में घटित होने वाली घटनाओं का केन्द्र बिन्दू है । वह एक ऐसी परित्यक्ता नारी है जिसे सामाजिक जीवन की परिस्थितिवश पति भैरोवासी अपने घर से निकाल देता है । प्रेमचन्द ने सुभागी के माध्यम से यह कहलाने का प्रयत्न किया है, कि नारी मार से नहीं प्यार से वश में आती है । भैरो उसे बहुत पीटता था । सूरदास उसे अपने घर में क्यों न रख ले लेकिन अन्धा संसार तो किसी की नियत नहीं देखता । सूरदास उसे सेवामयी रमणी एवं सुन्दर व्यावस्थापिका समझ कर ही शरण देते हुए कहता है "अब तो भैरो ने इसे निकाल दिया, मैं रख लू तो कौन बुराई है[17]" । इस कर्मठ नारी को विचार आता है कि अब मैं कभी भैरो के घर ना जाउंगी, अलग रहकर ही मेहनत-मजूरी करके जीवन यापन करूंगी । सूरदास के प्रति उपकार जताते हुए वह राजा साहब से सिफारिस करते हुए कहती है "'हम गरीब औरतों का तो यही एक आधार है, नारी को तो मौहल्ले के मरद कभी जिन्दा न छोड़तें - - - वहीं एक बेचारा था कि हम औरतों की पीठ पर खड़ा हो जाता था[18]" । इतना होने पर भी भैरो सुभागी को चाहे जितना पीटे अथवा लांछित करे किन्तु फिर भी वह पतिभक्त नारी ही दृष्टि गोचर होती है ।

'गोदान' उपन्यास की नारी पात्र नोहरी एक असफल पुनर्विवाहित विधवा है, उसे भोग-विलास की लालसा इतनी है कि विधवा होने पर तीन मास पश्चात् भोला से विवाह कर लेती है । वह दिल की बड़ी ओछी है, किन्तु अत्यन्त व्यवहार कुशल है । भोला के साथ विवाह के बाद वह घर की स्वामिनी बन जाती है । वह नोखेराम को भी अपने जाल में फंसा कर उसे क्रीड़ा कंदुक बना लेती है । उसने अपने पति भोला को भी अपने वश में कर रखा है । ग्रामीण जन जीवन में धार्मिक मान्यताओं, रूढिवादी विचारधाराओं और परम्परागत रीति-रिवाजों का प्रचलन बहुत अधिक पाया जाता है । इन्हीं रूढिवादी विचारों को ग्रहण करने में ग्रामीण नारियों का विशेष योगदान रहा है । प्रेमचन्द ने अपने उपन्यास साहित्य में जैसे - वरदान, रंगभूमि, सेवासदन, प्रेमाश्रम, कायाकल्प, कर्मभूमि, गोदान आदि से नारी के जीवन संघर्ष चित्रण व्यापक स्तर पर हुआ है –

इस प्रकार प्रेमचन्द ने ग्रामीण नारियों में सभी न्यायोचित गुणों का समावेश किया है । उनमें मानवीय दुर्बलताए भी उन्होंने स्पष्ट की है । उनकी नारी भले ही आर्थिक रूप से पराजित रही हो लेकिन अन्नतः वह न्याय के लिए समानता के लिए बड़ी से बड़ी विपत्ति का डटकर सामना करती है । इन कुछ परिवर्तनों के होते हुए भी प्रेमचन्द ने ग्राम जीवन का जो मूलभूत प्रवृत्यात्मक चित्रण किया है उसमें सनातन गांव की धडकन है । वह भारतीय कृषक जीवन का सम्पूर्ण चित्र है और कुल मिलाकर लोक संस्कृति का अत्यन्त ही निर्मल दर्पण है ।

अतः निष्कर्ष रुप से कहा जा सकता है कि वैज्ञानिक उपलब्धियों के चरमोत्कर्ष की बीसवीं सदी में व्यापक परिवर्तन की जो लहर उठी थी, उसे भी प्रेमचन्द ने उपन्यास में बहुत सहज ढंग से स्पष्ट किया है, जिससे गांवों और शहरों पर क्या असर पड़ा । सभी जीवन मूल्यों और सत्यों को अर्थ की आंख से देखा जाने लगा है । निश्चय ही नगरीय नारी की स्थिति यहां वरेण्य नहीं है लेकिन मानवता का कभी पूर्णतय क्षय नहीं होता, अस्तु - आस्था, विवेक का दामन पकड़ा जायेगा तो स्थितियां स्वय ही मानवानुकूल होती चली जायेगी, यही मुंशी प्रेमचन्द की युगान्तकारी सोच रही है । इसलिए प्रेमचन्द ने अपने इन विचारों को अपने उपन्यासों में ग्रामीण नारी के जीवन संघर्ष के माध्यम से व्यक्त किया है ।

सन्दर्भ सूची

1. ज्ञान अस्थान, हिन्दी उपन्यासों में ग्राम समस्यायें, पृ. – 32
2. लक्ष्मीकान्त पाण्डेय, प्रेमचन्द साहित्य सन्दर्भ, पृ. 342
3. श्री नारायण भारद्वाज, प्रेमचन्द के उपन्यास, पृ. – 58
4. मुंशी प्रेमचन्द, गोदान, पृ. - 1
5. प्रेमचन्द, पृ. – 46
6. प्रेमचन्द, कर्मभूमि, पृ. – 170
7. कर्मभूमि, पृ. – 318
8. प्रेमचन्द, पृ. – 332
9. प्रेमचन्द, पृ. – 332
10. प्रेमचन्द, प्रेमाश्रम, पृ. – 301
11. प्रेमचन्द, गोदान, पृ. – 369
12. प्रेमचन्द, गोदान, पृ. – 210
13. प्रेमचन्द, गोदान, पृ. – 211
14. प्रेमचन्द, गोदान, पृ. – 213
15. प्रेमचन्द, सेवासदन, पृ. – 44
16. प्रेमचन्द, सेवासदन, पृ. – 224
17. प्रेमचन्द, रंगभूमि, पृ. – 575
18. प्रेमचन्द, रंगभूमि, पृ. – 299